ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(7): 14-17
www.allresearchjournal.com
Received: 18-04-2024
Accepted: 21-05-2024

डॉ. विमलेन्दु कुमार विमल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस. एम. आर. सी. के
महाविद्यालय, समस्तीपुर
ग्राम–सिरदिलपुर, पो.–पटोरी
जिला–समस्तीपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. विमलेन्दु कुमार विमल
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस. एम. आर. सी. के
महाविद्यालय, समस्तीपुर
ग्राम–सिरदिलपुर, पो.–पटोरी
जिला–समस्तीपुर, बिहार, भारत

नई कविता का यथार्थवादी सौंदर्य

डॉ. विमलेन्दु कुमार विमल

DOI: https://doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i7a.11851

सारांश
आधुनिकता के नाम पर की जाने वाली साहित्यिक बहसें निर्थक और कुंठित होती हैं, जो मनुष्य की प्रगति में बाधक है। नई कविता उस युग की कविता है जहां हमारा समाज सिद्धांतों, अधिकारों एवं उनके प्रभावों से उत्पन्न शहरीकरण का दंश झेलता है। ये बातें मनुष्य की संवेदना पर गहरा असर डालती हैं। नई कविता के कवियों में विद्रोह के स्वर स्पष्ट मुखर है, जिसकी प्रेरणा उन्हें निराला से मिली थी। इन कवियों ने नगर के सुख–दुःख की अभिव्यक्ति कर मानवता को जीवित रखने का प्रयास किया है। औद्योगिककरण के कारण शहरी सभ्यता का प्रचार–प्रसार इतना बढ़ा कि कोई उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। तभी तो इन कवियों ने नग्न यथार्थ को व्यक्त करने में कोई संकोच नहीं किया है, जिसके कारण इन कविताओं का सौंदर्य और बढ़ गया है। कवि ने यथार्थवादी सौंदर्य के बहाने प्रेम की जिजीविषा को बनाये रखने का भरपुर प्रयास किया है जिसमें नैसर्गिक प्रेम की मंदाकिनी प्रवाहित हुई है।
यही कारण है कि नई कविता का यथार्थवादी सौंदर्य नई दिशओं की ओर निःसृत होती हुई दीखती है। जिसमें मानवता के प्रति निष्ठा बरकरार है, जो नई कविता के सौदर्यबोध को दर्शाता है।

कूटशब्दः यथार्थवादी सौंदर्य, निर्थक, कुंठित, शहरी सभ्यता

प्रस्तावना
नई कविता की परम्परा को स्पष्ट करना साधारण बात नहीं है, प्रगतिशील कविता के इतिहास को उकेरने पर कुछ बातें स्पष्ट होती हैं, जिसके कारण इसके रहस्य को जानने में कुछ आसानी होती है। छायावाद उनका विकास नई कविता में किया, जो यथार्थ के बहुत ही करीब है। यथार्थ और आधुनिकता के नाम पर की जाने वाली साहित्यिक बहसें निर्थक और कुंठित होती हैं, जो मनुष्य की प्रगति में बाधक है। कला दृष्टि कठोर यथार्थ को भी द्रवीय सौंदर्य दे देती है। यही कारण है कि नई कविता में संघर्ष और विद्रोह का स्वर आरंभ से ही दिखाई पड़ता है, जिसे हम विद्रोही कवि 'निराला' की कविता 'कुकुरमुत्ता' में देख सकते हैं। नई कविता उस युग की कविता है जहां हमारा समाज सिद्धांतों, अधिकारों एवं उनके प्रभावों से उत्पन्न शहरीकरण का दंश झेलता है। ये बातें मनुष्य की संवेदना पर गहरा असर डालती हैं। जिसका प्रभाव कविता पर प्रत्यक्षतः पड़ता है, जिसमें यथार्थ का नग्न रूप छिपा होता है। जिसके कारण ही कविता में सौंदर्य की सृष्टि होती है और कविता यथार्थवादी कहलाती है। केदारनाथ अग्रवाल ने रूढ़िगत कर्महीनता पर सरस चोट करते हुए यथार्थ को दर्शाने का प्रयास किया है–

''धोबी गया घाट पर
राही गया बाट पर
मैं न गया घाट और बाट पर
बैठा रहा टाट पर
दोनों हाथ काटकर
जीता रहा ओस चाटकर'' –1

नई कविता में निराला जैसा सक्षम कवि दूसरा नहीं हुआ। 'तोड़ती पत्थर' उनकी आर्थिक विषमता की कविता है। 'भिक्षुक' शीर्षक कविता एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में हमारे सामने आती है। कवि जैसे पुकार कर कहता है

''वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता,
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को– भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता। –2

पूंजीवादी व्यवस्था सामंतवाद और वर्तमान शासन पर करारा चोट करती है। निराला की कविता 'कुकुरमुत्ता' इस यथार्थ को व्यक्त करने में पूर्णतः कामयाब हुई है, जो यथार्थवादी सौंदर्य को स्पष्ट करने में महती भूमिका अदा करती है –

''अबे सुन बे गुलाब
भूल मत जो पाई खुशबू रंगोआब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतराता है कैपिटलिष्ट।'' –3

नई कविता के कवियों में विद्रोह के स्वर स्पष्ट मुखर है, जिसकी प्रेरणा उन्हें निराला से मिली थी। दुष्यंत कुमार ने इन्दिरा सरकार में अनास्था प्रकट करते हुए कहा–

''कहाँ तो तय था चिरागों हर घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए,
एक बूढ़ा आदमी है मुल्क में यारो कहो,
इस अंधेरी कोठरी में एक रोशनदान है। –4

नई कविता देश की बीहड़ परिस्थितियों से प्रभावित होने की दिशा में सर्वाधिक मुखर एवं प्रखर है। यही कारण है कि अशोक वाजपेयी ने 'पूर्वग्रह' के अंक में कविता–संग्रह की संख्या को देखते हुए 1980 को कविता की वापसी का वर्ष घोषित किया।
नई कविता की त्याग, पीड़ा और पौरूष की सूक्ष्म अभिव्यक्ति ने ही उसे ऊँचाई पर प्रतिष्ठित किया है। जब निराला लिखते हैं –

''चाल ऐसी मत चलो।
सृष्टि से ही गिर रहा जो
दृष्टि से फिर मत छलो।''

नई कविता में अमीरों के प्रति शेष की चलन जो निराला से चल पड़ी वह हिन्दी साहित्य में आज भी बनी हुई है। कवि केदार ने गरीब–अमीर में भेद करना, गरीबों का पक्ष लेना अपने सहज बोध से सीखा था। एक चित्र प्रस्तुत है –

''देश के बच्चे
झंडा ले हाथों में
गर्वीली माता की गोदी में
दुश्मन की गोली से प्राण दे देते हैं,
स्वर्ग को जाते है।
सच्चे आदर्श हो जाते हैं।
देश के बच्चे।''

अपनी और जनता की बेबसी देखकर केदार ने सन् 1942 की अन्य कविता में लिखा है –

''सुख–सम्पत्ति की सांसें मुरदा
आशा की बल्लरियां मुरदा
आजादी के सपने मुरदा
जय और पराजय है मुरदा
यह तो मुरदों की धरती है।'' –5

स्थिति बिगड़ने पर नई कविता के कवि धूमिल ने लिखा, जिसमें यथार्थवादी सौंदर्य की खनक सुनाई पड़ती है –

''एक आदमी रोटी बेलता है,
दूसरा आदमी रोटी से खेलता है,
तीसरा आदमी न रोटी को बेलता है,
न रोटी से खेलता है।
मैं पूछता हूँ वह तीसरा आदमी कौन है –
देश की सांसद मौन है'' –6

इस तरह की बेबाक टिप्पणी हिन्दी साहित्य में बहुत कम ही सुनाई पड़ती है। जिसका परिणाम रहा है कि नरेन्द्र शर्मा जब लिखते हैं तो रौंगटे खड़े हो जाते हैं।

''पेट काटकर महल बना है
दुनिया के मजदूरों का।''

ऐसी ही पंक्तियों के कारण नई कविता की संर्घषशीलता बरकरार बनी हुई है। यही कारण है कि इस कुहेलिका को तोड़ने के लिए ललकारते हुए कवि हरिहर प्र. 'नूतन' ने लिखा है –

''देखना हो भारत का नैतिक पतन
तो सीधे चलो सीधे चलो
सीधे चलो संसद भवन।'' –7

कवि बिल्कुल स्पष्टवादी है। उसे परिणाम की चिंता नहीं है।
नई कविता के कवि द्वारिका राय 'सुबोध' देश की दुर्दशा को भांपते हुए अपनी सूक्ष्म अभिव्यक्ति से नई कविता के यथार्थ को अभिव्यक्त करके उसके आंतरिक सौंदर्य को निखारने का प्रयास किया है। इस देश को कालेधन की नागिन ने इस तरह डंस लिया है कि उसके आघात से बचने के सारे प्रयास निरर्थक साबित हो रहे हैं, क्योंकि हवा ही विषैली हो गई है –

''एक गर्जन
और है तर्जन
मेध में है
हो रहा सृजन
कौंधतीं बिजलियां बहुत
हवा नागिन बनी
डंस गई।'' –8

नई कविता के कवि लक्ष्मीकांत वर्मा, कुँवर नारायण, भारतभूषण अग्रवाल, धर्मवीर भारती, मुक्तिबोध, श्रीकांत वर्मा, नागार्जुन आदि की कविताओं में यथार्थ का नग्न रूप देखने को मिलता है। इन कवियों ने रूढ़ियों और परंपरा के प्रति विद्रोह का शंखनाद किया है।
इस तरह की भावना 'कुकुरमुत्ता' में देखते ही बनती है। नई कविता के कवियों ने सृजन की प्रेरणा शहरी परिवेश की ऊब, उचाट और संत्रास से ही प्राप्त की है। निम्न पंक्तियों में महानगरीय उचाट की अत्यंत सफल प्रयोग कर इसके यथार्थवादी दृष्टिकोण को उजागर किया गया है –

''इस नगर में रहते हुए
मन हो गया है उचाट
और मेरे प्यारे सूर्य की रोशनी
लगती है कभी–कभी बीमार।'' –9

नई कविता के कवियों ने नगर के सुख–दुःख की अभिव्यक्ति कर मानवता को जीवित रखने का प्रयास किया है। औद्योगिककरण

के कारण शहरी सभ्यता का प्रचार–प्रसार इतना बढ़ा कि कोई उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका। जिसके कारण बेरोजगार नवयुवकों ने नई संवेदना और नए भाव बोध को जन्म दिया। इसका सीधा प्रभाव नई कविता पर पड़ा –

''कि इस नगर में रहने से अब अच्छा है,
कि हम लौट चले जंगल की ओर।
और उतार के सभी कपड़े
और भयमुक्त होकर
मारे किलकारियाँ।'' –10

नई कविता के कवियों ने नग्न यथार्थ को व्यक्त करने में कोई संकोच नहीं किया है, जिसके कारण इन कविताओं का सौंदर्य और बढ़ गया है। भारतभूषण अग्रवाल की कविता 'टूटे सपनों का सपना' में उन्होंने कला रूप आर्ट पर यथार्थ रूपी कॉमर्स की कसमसाहट को व्यंगपूर्ण शैली में व्यक्त कर कमाल की महारथ हासिल की है –

''कल रात मैंने स्वप्न देखा
मैंने देखा कि मेनका अस्पताल में नर्स
हो गई है।
और विश्वामित्र ट्यूशन पढ़ा रहे हैं
उर्वशी ने डांस स्कूल खोल दिया है
नारद गिटार सिखा रहे हैं। –11

नई कविता के कवियों में गिरिजा कुमार माथुर का भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने प्रकृति के माध्यम से नई कविता के बिम्ब को उभारने का प्रयास किया है, जो नई कविता का यथार्थवादी दृष्टिकेण है –

''लहरदार कटि
बांके उभरे नितंब
खुली–कांपती – सी
हथेली नरम
सुबह
बूंदकियों दार मेंहदी लगा
पांव में
झांझ का आलता
हरी धूप की किरण–सी ।''
लता''। –12

यथार्थ की कसौटी पर नग्नता का नामो–निशान इसमें नहीं है। यह कविता संयोग सुख की अनुपम मिसाल है जिसमे अश्लीलता नहीं है। यही नई कविता की विशेषता है।
नई कविता में सामाजिक यथार्थ का चित्रण व्यंग्य के रूप में बहुत ही स्पष्ट रूप में हुआ है। अज्ञेय जब लिखते हैं तो नई कविता के अस्तित्व की भविष्यवाणी करते हैं –

''अपने दस वर्ष और दिए
बड़ी आपने अनुकंपा की
हम नतसिर है।''

भवानीप्रसाद मिश्र ने यथार्थवादी कसौटी पर कसते हुए कविता के सौंदर्य को आंकने का प्रयास किया है–

''जी हाँ हुजूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह–तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं सभी किसिम के गीत बेचता हूँ।'' –13

केदारनाथ अग्रवाल की व्यंग्य कविताओं में यथार्थवादी सौंदर्य देखते ही बनता है। वे बहुदेववादी आस्तिकता पर विशेष रूप से व्यंग्यपूर्ण चोट करते हैं। उन्हें रूढ़िगत परम्परा से सख्त नफरत है –

''कामिनी–सी अब लिपटकर सो गई है
रात यह हेमंत की
दीप–तन बन उष्म करने
सेज अपने कंत की।'' –14

प्रकृति के उन्मुक्त एवं स्वतंत्र स्वरूप का वर्णन केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में देखने को मिलता है, जिसमें यथार्थ के विम्ब उभरते हैं –

''चोली फटी सरस सरसों की
नीचे गिरा फागुनी लहँगा
ऊपर उड़ी चुनरियां नीली
देखों हुई पहाड़ी विवसन
आतपतप्ता।'' –15

यथार्थवादी चेतना से अभिभूत राजमणि राय 'मणि' की कविताओं में प्राकृतिक सुषमाओं से घिरा कवि पहाड़ी, कंदराओं में मन को टटोलने का प्रयास कर रहा है, न जाने किसी अदृश्य शक्ति से मुलाकात हो जाय। कवि हठात् कह उठता है –

''डर लगता है, छूट न जाऊँ
मेरी बाँह पकड़ लो।'' –16

इस कविता में कवि के यथार्थवादी नवचेतना के दर्शन की जिजीविषा प्रगाढ़ रूप में निःसृत हुई है।
जलतरंगों के उछाल पर मचलती हुई धारा में समय के तेज प्रखर में यथार्थ की ओर इंगित करता हुआ मन के संवेग को प्रकट करता है। ज्ञानशंकर शर्मा की कविता कोमल हृदय के तंतुओं को झकझोरती हुई आशा के सहारे गतिरोध को तोड़ने के लिए व्यग्र है। इस कविता में कविता के यथार्थवादी सौंदर्य की निष्ठा अपने चरम पर परिनिष्ठ हुई है –

''दूर किनारा दूर नहीं अब
हिम्मत ही पतवार
नैया जल्दी ले चल माँझी
जाना है सागर पार।'' –17

नई कविता में यथार्थवादी सौंदर्य की अभिव्यक्ति स्नेहिल भावनाओं के माध्यम से भी स्फूर्त हुई है। मनोज तोमर की कविता इस ओर इंगित करती है –

दो घड़ी हँस
लो, हंसा लो,
बात कुछ सुन
लो, सुना लो
ढ़ल रही है
रात, प्रियतम।'' –18

जनवादी चेतना को नई कविता के माध्यम से अभिव्यक्त करने में हरिहर प्रसाद 'नूतन' को कमाल की महारत हासिल है जिसमें यथार्थवादी सौंदर्य की पुष्टि होती है –

''बाँम दहिने के फेरे में,
बीत गई कोहवर की रात।
किसको कहूँ मरम की बात।'' –19

यही नव चेतना नई कविता का प्राणधार है जिसमें सौंदर्य मचलता है।

इस प्रकार नई कविता में व्यंग्य भी एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप मे उभरा है। इन कविताओं में यथार्थ, कुंठा, संत्रास, विखराव की प्रवृत्तियाँ अनायास ही देखने को मिल जाती है –

''सहज काव्य के साथ जुड़े हैं
हम वादों से अलग खड़े हैं।
भूखी नंगी कविता के शव
मुर्दाघर में बंद पड़े हैं।''–20

और जानकीवल्लभ शास्त्री ने लिखा–

''कोई और सुर हो तो छोड़ो सँवरकर
ये नग्में पुराने हैं गायें हुए हैं।''

नई कविता के कवि ने यथार्थवादी सौंदर्य के बहाने प्रेम की जिजीविषा को बनाये रखने का भरपुर प्रयास किया है जिसमें नैसर्गिक प्रेम की मंदाकिनी प्रवाहित हुई है। सतीश 'अकेला' ने लिखा है –

''तुम समझते हो प्यार को जन्नत,
प्यार के पीछे तो दर्द छिपा होता है,
आदमी को ढोता है आदमी देखो,
ये खुदा कैसा न्याय यहाँ होता है। –21

इस कविता के द्वारा नई कविता के यथार्थबोध को प्रेम के आंतरिक सौंदर्य के बहाने निरूपित करने का प्रयास किया गया है।

यही कारण है कि नई कविता का यथार्थवादी सौंदर्य नई दिशाओं की ओर निःसृत होती हुई दीखती है। कला कठोर यथार्थ को भी ठोस आधार देकर नवीन संचेतना का संचार करती है, जिसमें यथार्थवादी सौदर्य अपनी निष्ठा को बनाये रखने में संघर्षशील रहती है। यही कारण है कि इन कविताओं में व्यंग्यात्मक सौदर्य के साथ सामाजिक यथार्थ की झलक भावनात्मक सौंदर्य के साथ उजागर हुई है, जिसमें मानवता के प्रति निष्ठा बरकरार है, जो नई कविता के सौदर्यबोध को दर्शाता है। जिसके कारण नई कविता जीवंत बनी हुई है।

संदर्भः

1. डॉ. उषा कुमारी, 'नई कविता की चिंतन भूमि,' पृ. सं.–62
2. विश्वम्भर 'मानव' – आधुनिक कवि, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. सं.–94
3. वही पृ. सं. – 95
4. 'धर्मयुग', 1 से 7 मई, 1983, पृ. स.–22
5. रामविलास, नयी कविता और अस्तित्ववाद' राजकमल, प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. सं.–267
6. द्वारिका राय 'सुबोध' सं. 'युग संदेश', इज्जतनगर, उत्तर प्रदेश, पृ. सं.–18
7. डा. नवलकिशोर प्र. श्रीवास्तव–'नई कविता और परंपरा', रीगल प्रकाशन, इलाहाबाद, पृत्र सं.–108
8. द्वारिका राय 'सुबोध' – 'प्राणों की बांसुरी', अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, बिहार, पृ. सं.–59
9. डॉ. उषा कुमारी– नई कविता की चिंतन भूमि, पृ. सं.–14
10. बच्चन और अजित द्वारा रूपादित कात्य ग्रंथ, 'आठवें दशक की प्रतिनिधि श्रेष्ठ कविताएँ', पृ.सं.124
11. अज्ञेय – 'तारससंक' पृ. सं.–97
12. डॉ. श्रीनिवास शर्मा– 'हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि', तक्षशिला प्रकाशन, अंसारी रोड
13. दरियागंज, नई दिल्ली, पृ. सं.–193
14. आराधना सिंह–'नई कविता की आत्मा', पृ. सं.–25, इलाहाबाद
15. जगदीश प्रकाश– सं. 'धूप के धान', पृ. सं.–49
16. केदारनाथ अग्रवाल– 'फूल नहीं रंग बोलते हैं,'' पृ. सं.–154
17. विवेक यादव – सं. 'प्रतिविम्ब', इलाहाबाद, पृ. सं.–2.
18. ज्ञान शंकर शर्मा – 'मंजिल दूर नहीं,' पृ. सं.–67
19. 'सरिता', अगस्त द्वितीय 1989
20. 'सतत्' – अप्रैल 1990
21. कनक चौधरी – सं. 'दिशा' पटना, पृ. सं.–18
22. प्रभा ठाकुर – सं. नई कविता के स्वर, पृ. सं.–38, इलाहाबाद